International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 22-05-2019; Accepted: 24-06-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2019; Page No. 100-102

भारत की दूरवर्ती शिक्षा

डॉ. मुकेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, एल.एन.टी. शिक्षण महाविद्यालय पानीपत, हरियाणा, भारत।

सारांश
भारत में दूरवर्ती शिक्षा में तीव्रता से प्रगति हो रही है। आज भारत में 31 से अधिक विश्वविद्यालय दूरवर्ती शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं। दूरवर्ती शिक्षा के इतिहास में सर्वप्रथम 1982 में आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसी के परिणामस्वरूप सितम्बर 1985 में भारत सरकार ने इग्नू की स्थापना का निर्णय लिया। भारत में दूरवर्ती शिक्षा के विकास का तीन अवस्थाओं में अवलोकन किया जा सकता है। पहली पूर्व–टेप की अवस्था, दूसरी टेप की अवस्था, तीसरी विकासोन्मुखी अवस्था।
विश्व के विभिन्न देशों में दूरवर्ती शिक्षा के विकास का विश्लेषण करने पर इसकी कुछ प्रवृत्तियों पर विचार करने एवं आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रणाली के भावी स्वरूप का अनुमान लगाने में सहायता मिली है जिसका अध्ययन हम आगे करेंगे। दूरवर्ती शिक्षा पाठ्यक्रम का क्षेत्र, विस्तार एवं प्रकार नित्य विस्तृत होने वाले हैं। इसके द्वारा शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने, पाठ्यक्रम का विकास करने तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि के मूल्यांकन में सुधार लाने में सहायता मिलेगी। उच्च शिक्षा के लिये भी सभी को समान अवसर प्राप्त होंगे।

मूल शब्द: विकासोन्मुखी, विद्यार्थियों, विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा

प्रस्तावना
विभिन्न देशों में दूरवर्ती शिक्षा में तीव्रता से प्रगति हो रही है। यह इसके प्रसार तथा लोकप्रियता का प्रमाण है। भारत में सन् 1960 के आस–पास केवल चार विश्वविद्यालय ऐसे थे जो आंशिक रूप में इस प्रकार की दूरवर्ती शिक्षा प्रदान कर रहे थे। आज भारत में 31 से अधिक विश्वविद्यालय दूरवर्ती शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं, जो स्पष्ट रूप से दूरवर्ती शिक्षा की अद्भुत प्रगति प्रदर्शित करते हैं। भारत की शिक्षा प्रणाली में दूरवर्ती शिक्षा ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

भारत में दूरवर्ती शिक्षा का प्रारंभ
लगभग 30 वर्ष पूर्व भारत में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार शिक्षा को एक योजना के रूप में लिया गया। इस प्रयोग की सफलता ने देश के अन्य विश्वविद्यालयों को दूरवर्ती शिक्षा की प्रणाली के माध्यम से अनुदेशन को प्रोत्साहित किया। दूरवर्ती शिक्षा के इतिहास में सर्वप्रथम 1982 में 'आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई। इस प्रकार विश्वविद्यालय के स्तर की एक स्वतन्त्र स्वायत्त संस्था की स्थापना हुई। सन् 1970 से 1980 की अवधि में अनेक प्रादेशिक विश्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार शिक्षा के संस्थान/निदेशालय प्रारम्भ किये गये, जिन्होंने दूरवर्ती शिक्षा को प्रोत्साहित किया। इससे विभिन्न राज्यों द्वारा एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना की प्रबल माँग को बल मिला, जो देश के सभी निदेशालयों के कार्यों में समन्वय कर सके। यह भी अनुभव किया गया कि इस प्रकार की दूरवर्ती शिक्षा के विकास में पूर्णतः समर्पित संलग्न उच्चतम संस्थान अत्यन्त उपयोगी होंगे।
परिणामतः सितम्बर, 1985 में भारत सरकार ने इन्दिरा गाँधी ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) की स्थापना का निर्णय लिया। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है, क्योंकि पूर्णतः दूरवर्ती शिक्षा के प्रति समर्पित विश्वविद्यालयों की स्थापना से परम्परागत विश्वविद्यालय संरचना के कारण दूरवर्ती शिक्षा के विकास में आने वाली बाधाएं दूर हो जायेंगी। पिछले दशक में आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय के अतिरिक्त भारत में चार अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई है, जिनके नाम हैं – कोटा यूनिवर्सिटी, नालन्दा ओपन यूनिवर्सिटी, यशवन्त राव चव्हाण ओपन यूनिवर्सिटी तथा इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का उत्तरदायित्व सम्पूर्ण देश के मुक्त विश्वविद्यालयों एवं अन्य दूरवर्ती शिक्षा संस्थाओं के मानदण्डों/प्रतिमानों का निर्धारण, उनका निर्वाह करना तथा समन्वय करना है। इसके साथ–साथ यह भी वांछनीय है कि विभिन्न दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों में यथासम्भव पुनरावृत्ति को रोका जा सके, जिससे विभिन्न पाठ्यक्रमों की पाठ्यवस्तु को पुष्ट किया जा सके।
आज तक दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्य ठीक प्रकार से परिभाषित नहीं किये गये हैं। इस प्रणाली का अभी विकास हो ही रहा है। भारत में दूरवर्ती शिक्षा के विकास का तीन अवस्थाओं में अवलोकन किया जा सकता है।

1. पूर्व–टेप की अवस्था
इस अवस्था का ज्ञान भारत में 1960 के दशक में किये गये प्रयासों से होता है। इस समय केवल चार पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थानों, दिल्ली (1962), पटियाला पंजाब (1968), मेरठ (1969) एवं मैसूर (1969) की स्थापना हुई। इस प्रकार 1960 के दशक का वह समय था जब दूरवर्ती शिक्षा का प्रयोग किये जाने का विचार किया गया तथा इसने भारत भूमि में अपनी जड़ें जमानी प्रारम्भ कर दीं। इस दृष्टि से भारत में दूरवर्ती शिक्षा की क्रान्ति आरम्भ हुई थी तथा इसमें क्रमशः धीरे–धीरे गति आती गयी, जिससे यह पूर्व–टेप अवस्था में पहुँच गयी।

2. टेप की अवस्था
सन् 1970–1980 के दशक के मध्य 19 विश्वविद्यालयों ने पत्राचार पाठ्यक्रम के संस्थान/निदेशालय प्रारम्भ किये और इस प्रकार दूरवर्ती शिक्षा को एक प्रोत्साहन मिला। इस अवधि के दौरान स्थापित संस्थाओं एवं निदेशालयों ने उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम एवं कुछ डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी शुरु किये थे।
इस दशक में कुछ दूरवर्ती–शिक्षण इकाइयाँ स्थापित की गईं।

पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश (1971), आन्ध्र एवं वेंकटेश्वर (1972), हैदराबाद, पटना (1974), भोपाल, उत्कल एवं बम्बई (1975), मदुरई, जम्मू, कश्मीर एवं राजस्थान (1976), उस्मानिया एवं केरल (1977), इलाहाबाद एवं बम्बई (1978), अन्नामलाई एवं उदयपुर (1970–79) के दशक में दूरवर्ती शिक्षा को अधिक बढ़ावा मिला। अधिकांश विश्वविद्यालयों में दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली को शिक्षा की एक वैकल्पिक प्रणाली के रूप में ग्रहण किया। इससे भी अधिक यहाँ 1960 के दशक में प्रयोगात्मक रूप में केवल पूर्व–स्नातक पाठ्यक्रम ही आरम्भ किये गये थे। सन् 1970 के दशक में पत्राचार पाठ्यक्रम के संस्थानों/निदेशालयों द्वारा डिग्री एवं डिप्लोमा प्रमाण–पत्र हेतु पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किये गये।

3. विकासोन्मुखी अवस्था

सन् 1970 के दशक के अन्त तक दूरवर्ती शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली से सम्बद्ध हो गयी थी। इस कारण इसे परम्परागत विश्वविद्यालयों की परिधि में काम करना था। भारत में दूरवर्ती शिक्षा के इतिहास में प्रथम बार आन्ध्र प्रदेश सरकार ने सन् 1982 में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय किया। इस प्रकार दूरवर्ती शिक्षा के विकास के लिए एक विश्वविद्यालय स्तर की स्वायत्तशासी संस्था की माँग होने लगी, जिससे देशभर के निदेशालयों के कार्यों में समन्वय कर सकें। इस बात का अनुभव किया गया कि इस प्रकार की दूरवर्ती शिक्षा के विकास हेतु पूर्णतः समर्पित एक सर्वोच्च संस्था अत्यन्त उपयोगी होगी। इसके परिणामस्वरूप सितम्बर 1985 में भारत सरकार ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया।

यहाँ यह बताना भी उचित होगा कि विभिन्न प्रादेशिक सरकारों ने अपने–अपने प्रदेशों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना की दिशा में प्रयास किया। इस क्रम में महाराष्ट्र, केरल, बिहार एवं मध्य प्रदेश प्रमुख हैं। अन्य कुछ प्रदेशों में निकट भविष्य में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु प्रदेश की विधानसभाओं में विधेयक प्रस्तावित किये जायेंगे। राजस्थान सरकार ने कोटा में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की है। उत्तर प्रदेश में राजऋषि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद में है।

दूरवर्ती शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ

विश्व के विभिन्न देशों में दूरवर्ती शिक्षा के विकास का विश्लेषण करने पर इसकी कुछ प्रवृत्तियों पर विचार करने एवं आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रणाली के भावी स्वरूप का अनुमान लगाने में सहायता मिली है। विश्व में दूरवर्ती शिक्षा की स्थिति पर विचार करने के बाद निम्नांकित निर्णयों पर पहुँचते हैं –

- दूरवर्ती शिक्षा ने अपने शैक्षिक एवं आर्थिक उपयोगिता के सिद्धान्त को अधिक उपयोगी बनाया है। शिक्षा के नये विकल्प को खोज निकाला है। इसमें सम्प्रेषण की तकनीकी का प्रयोग करके शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण के सभी क्षेत्रों में गुणात्मक विकास किया है।
- इसमें शैक्षिक अवसरों की समानता एवं विस्तार तथा शिक्षा को समाज के उपेक्षित वर्ग यहाँ तक कि दूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या तक ले जाने का प्रयास किया है।
- विशेषकर प्रौढ़, औपचारिक शिक्षा से एवं कार्यशील व्यक्तियों के लिये उचित है।
- सभी स्तरों पर विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान करती है।
- सामान्य शिक्षा, आधारभूत शिक्षा, सतत शिक्षा, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा जिनमें अन्तर्सेवा प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम आदि सम्मिलित हैं।
- विशेषतः विकासशील देशों की बढ़ती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था की जाती है।
- औपचारिक पारम्परिक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों जिनमें केवल सीमित सामर्थ्य ही है, के दबाव को कम कर सकती है।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा नवीन परिवर्तन लाने की सामर्थ्य रखती है। नवीन आयामों तथा प्रवर्तकों का उपयोग होता है।
- अपेक्षाकृत अधिगमकर्ता उन्मुखी हैं और इस कारण अधिगमकर्ता को अधिक आत्मविश्वासी बनाती है।
- अधिगमकर्ता के अध्ययन क्षेत्र के चयन–पाठ्यक्रम की अवधि आदि सम्बन्धी समुचित नया प्रारूप प्रदान करती है।
- उन व्यक्तियों को अवसर प्रदान करती है जो उच्च शिक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु औपचारिक शिक्षा की योग्यता नहीं रखते हैं।

इस प्रकार समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं एवं अधिगमकर्ताओं की अपेक्षाओं के प्रत्युत्तर में दूरवर्ती शिक्षा का निरन्तर चढ़ावक्रम का विस्तार हो रहा है। यह एक अत्यन्त प्रगतिशील एवं स्वस्थ प्रवृत्ति है, जो व्यवस्था की प्रामाणिकता को बढ़ाने एवं परिणामस्वरूप अधिगमकर्ता के लिये लाभप्रद होने हेतु बाध्य है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि शिक्षण अधिगम के दूरवर्ती रूप का केवल गृह–अध्ययन, स्वतन्त्र अधिगम, पत्राचार शिक्षा से बहुमाध्यम शिक्षण अधिगम व्यवस्था में विकास हुआ है। संचार तकनीकी के क्षेत्र में हुये विस्फोट ने नवीन संचार माध्यमों में दूरवर्ती शिक्षा के साथ एकीकरण को प्रेरणा दी है, जिसके फलस्वरूप नवीन प्रकार के दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों जैसे – यूनिवर्सिटी ऑफ एअर एवं मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है। इसका एक शिक्षा की मुक्त व्यवस्था के रूप में विकास हो रहा है, जो आयु, औपचारिक प्रवेश योग्यता, निवास स्थान, लिंग अधिगम गति या पूर्ण करने की अवधि आदि की अपेक्षा किये बिना सभी के लिये प्रवेश देती है, उन्हें अध्ययन के आधार प्रदान करती है।

दूरवर्ती शिक्षा व्यवस्था विशेष रूप से अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा सेवारत शिक्षकों को नयी दिशा प्रदान करने में उपयोगी हुई है। विशेष रूप से उन देशों में जहाँ अध्यापकों का अभाव है और सुप्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता है, इस दिशा में उपयोगी हुई है। पॉलेस्टेनियन अध्यापकों के लिये यूनेस्को योजना एवं अफ्रीकी अध्यापकों के लिये समान कार्यक्रमों को महान सफलता मिली है।

इससे भी अधिक उपयोगी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों, स्थापना एवं दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों के मध्य एवं सहयोग ने पाठ्यक्रमों एवं शिक्षण अधिगम विधियों आदि के सुधार के सम्बन्ध में सार्थक सामूहिक चिन्तन एवं सतत प्रयासों को दिशा प्रदान की है। यहाँ यह भी बताना उचित होगा कि कुछ देशों में जहाँ निजी अभिक्रमों का दूरवर्ती शिक्षा में विचारणीय योगदान है, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में लाभप्रद सहयोग प्रदर्शित हुआ है। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना के साथ दूरवर्ती शिक्षा एक उचित समयाबद्ध योजना के अन्दर प्रौढ़ अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित एक विशिष्ट शिक्षण अधिगम की अवधि के रूप में विकसित होगी। पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था आधुनिक समाज एवं कार्यशील जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिये अत्यधिक शक्तिशाली है, जबकि दूरवर्ती शिक्षा अपने उन्मुक्तता, नवनीयता एवं बहुमाध्यम–शिक्षण–अधिगम विधियों के गुणों के कारण शिक्षा प्रदान करने की अवस्था के पुनर्निर्माण एवं शिक्षा को अधिगमकर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप एवं उत्तरदायी बनाने तथा भविष्य में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने हेतु प्रयत्नशील है।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये दूरवर्ती शिक्षा के अन्तर्गत एक वैकल्पिक माध्यम से पारम्परिक शिक्षा के विस्तार के बजाय

एक वैकल्पिक प्रकार की शिक्षा अथवा पाठ्यवस्तु के विकास के प्रयास किये जा रहे हैं। इस दिशा में विगत दो शताब्दियों के दौरान हुये प्रत्यक्ष विकास का स्पष्ट प्रमाण यह है कि सम्पूर्ण विश्व में अनेक मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है।

विशाल जनसंख्या वाले देश विशेषकर विकासशील देश निरन्तर बढ़ती जनसंख्या की शिक्षा की माँग की पूर्ति केवल तब ही करने में समर्थ होंगे जब वे दूरवर्ती शिक्षा को एक विशाल रूप में प्रयोग करेंगे। शीघ्र ही भारत, मुक्त विश्वविद्यालयों एवं दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों की संख्या में विकासशील देशों में से एक होगा, लेकिन मुक्त विश्वविद्यालयों की सफलतता पारम्परिक दृढ़ शिक्षा व्यवस्था से बाहर निकलने हेतु उत्साह एवं नवीन परिवर्तन की भावना पर निर्भर करेगी। भविष्य में मुक्त विश्वविद्यालयों की एक ऐसी श्रृंखला की भी आवश्यकता होगी, जो नीचे से ऊपर की ओर वास्तविक दूरवर्ती शिक्षा व्यवस्था के निर्माण में सहायक होगी।

दूरवर्ती शिक्षा पाठ्यक्रम का क्षेत्र, विस्तार एवं प्रकार नित्य विस्तार होने वाले हैं। इसके द्वारा शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने, पाठ्यक्रम का विकास करने तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि के मूल्यांकन में सुधार लाने में सहायता मिलेगी। उच्च शिक्षा के लिये भी सभी को समान अवसर प्राप्त होंगे।

निष्कर्ष

दूरवर्ती शिक्षा एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो रही है तथा इस नवीन प्रणाली के विभिन्न पक्षों पर अत्यधिक अनुसन्धान किये जा रहे हैं। यह व्यवस्था आज सरलता से उपलब्ध नवीन संचार माध्यमों के विभिन्न प्रकारों में सुधार एवं एकीकरण लाने हेतु सक्रिय है। दूरवर्ती–शिक्षकों के लिये दूरवर्ती शिक्षा पाठ्यक्रमों का विकास किया गया है, जिससे उचित प्रकार के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जा सके। इसीलिए सभी विद्वान दूरवर्ती शिक्षा को एक वैकल्पिक प्रणाली मानते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, आर.ए., तुलनात्मक शिक्षा, पृ. 28.
2. शर्मा, एवं सक्सेना, तुलनात्मक शिक्षा, पृ. 96.
3. चौबे, डॉ. सरयू, तुलनात्मक शिक्षा, पृ. 137
4. सिंह, राजेन्द्र पाल, तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्त, पृ. 37.